

भारत सरकार  
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय  
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 2617

05 अगस्त, 2025 को उत्तरार्थ

**विषय: गन्ना फसल संबंधी सलाह**

2617. श्री धैर्यशील संभाजीराव माणे:

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) हातकणंगले जिले में गन्ना फसल सलाह के विशेष संदर्भ में मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्राप्त करने वाले किसानों का ब्यौरा क्या है और उनकी संख्या कितनी है;

(ख) क्या क्षेत्र-स्तरीय कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप उपज में सुधार हुआ है या उर्वरक दुरुपयोग में कमी आई है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) गन्ना किसानों को इस पहल के अंतर्गत प्रदान की गई अनुवर्ती विस्तार सेवाओं का ब्यौरा क्या है?

**उत्तर**

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री रामनाथ ठाकुर)

(क): महाराष्ट्र सरकार ने सूचित किया है कि हातकणंगले तालुका में गन्ना किसानों को 4,566 साँइल हेल्थ कार्ड (एसएचसी) वितरित किए गए हैं।

(ख): राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद (एनपीसी), नई दिल्ली ने वर्ष 2017 में महाराष्ट्र सहित 19 राज्यों के 76 जिलों में 170 मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं और 1700 किसानों को शामिल करते हुए 'भारत में एसएचसी के तीव्र वितरण के लिए मृदा परीक्षण इन्फ्रास्ट्रक्चर' पर एक अध्ययन किया। साँइल हेल्थ कार्ड की सिफारिशों के अनुसार उर्वरक और सूक्ष्म पोषक तत्वों के प्रयोग के परिणामस्वरूप, रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग में 8-10% की कमी देखी गई। साँइल हेल्थ कार्ड के अनुसार उर्वरक और सूक्ष्म पोषक तत्वों के प्रयोग से फसलों की उपज में कुल मिलाकर 5-6% की वृद्धि दर्ज की गई। महाराष्ट्र सरकार ने यह सूचित किया कि राज्य स्वास्थ्य आयोग ने किसानों को सही मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करने में सक्षम बनाया है, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन में वृद्धि हुई है।

(ग): महाराष्ट्र राज्य सरकार ने सूचित किया है कि उच्च उपज देने वाली, रोग-प्रतिरोधी और जलवायु-अनुकूल गन्ना किस्मों के खेत पर प्रदर्शन जैसी विस्तार सेवाएँ आयोजित की गईं। स्वस्थ फसल सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री (जैसे, सिंगल बड चिप तकनीक, टिशू कल्चर पौध) का वितरण किया गया। जैव ईंधन और जैविक खाद के रूप में गन्ने के उपयोग को बढ़ावा दिया गया। गुणवत्तापूर्ण सेट्स की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए गन्ना नर्सरी विकसित करने हेतु सहायता और सब्सिडी दी गई। साँइल हेल्थ कार्ड को समझने और उसकी सिफारिशों के कार्यान्वयन पर कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। खाद बनाने, अवशेष प्रबंधन और जैव उर्वरक के उपयोग पर सत्र भी आयोजित किए गए।